भारत के बाहर का नहीं। इसी में मैं फिर एक बार कहना चाहूंगा कि यहीं के अगर मूल निवासी हैं तो उनके अन्दर के उस हम मूल भारत की संतान हैं उस भाव को जागृत किये बिना ये विषय समाप्त नहीं होगा, वही एक रास्ता बनता है। उससे ही यह राष्ट्र प्रभावी होगा। हम परमवैभव की बात करते हैं। हम परमवैभव को प्राप्त हों और यह आज की आवश्यकता है कि हर पीढ़ी में, जन्म लिए हुए बालक ने एक श्रेष्ठ जीवन और परमवैभव की आकांक्षा का बीजारोपण करते रहना पडेगा। राष्ट्र एक शक्तिशाली बन सकता है इस भाव का निर्माण करना पड़ेगा। और इसलिए हर नई पीढ़ी ने इस श्रेष्ठता की आकांक्षा मन के अन्दर जागृत करना सर्वोच्च महत्वाकांक्षा मेरी यही रहेगी कि हमारा देश परमवैभव को प्राप्त करेगा। इस भाव को हर पीढ़ी ने प्रभावी रूप से संकल्पित करने की व्यवस्था इसको शसक्त करने की आवश्यकता है। सभी महापुरूषों ने यही किया है। हम कई महापुरूषों के नाम ले सकते हैं जिन्होंने स्वयं के लिए कुछ नहीं किया हैं। क्या छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपने लिए राज्य की कल्पना की थी, क्या गुरूगोविन्द सिंह जी ने लडाई करते समय अपने स्वयं की आकांक्षा को बनाया था, क्या दक्षिण का जो विजय नगर साम्राज्य स्थापित हुआ क्या वह स्वयं की सम्पत्ति के लिए किया था। क्या क्रान्तिकारियों ने अपना जीवन अर्पण करते हुए अपनी स्वयं की गरिमा के लिए किया था। इन सारे महापुरूषों की जीवन हमें ये संदेश दे रहे हैं कि परमवैभव की श्रेष्ठ आकांक्षा मन में लेकर चलिये, इस मार्ग पर चलिए, इस मार्ग पर चलते हुए जीवन में संघर्ष करना पडेगा। संघर्ष इस भाव का मन में मेरे लिए संघर्ष नहीं है यह तो अपने श्रेष्ठ विचारों के लिए है, इस श्रेष्ठ परंपरा के लिए है, इस श्रेष्ठ संस्कृति के लिए है। यह विचार हर पीढ़ी ने प्रभावी रूप से संकल्पित करने की आवश्यकता रहेगी जो अनेक महापुरूषों ने किया और वही भविष्य में कुछ वर्षों तक निरंतर करते रहना पडेगा। इसलिए पंडित जी के द्वारा ये सांस्कृतिक राष्ट्रवाद संकेत क्या देता है, तो यही संकेत दे रहा है कि इस भाव को सशक्त करना पडेगा और इस भाव को जागृत रखने के लिए नित्य कुछ बातों का स्मरण करना पडेगा और स्मरण करते-करते संकल्प लेकर चलने वाली पीढ़ी खड़ी होती जानी चाहिए। वही पीढ़ी विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाली बनेगी। विश्व के अन्दर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद यही विश्व के कल्याण का मार्ग अगर है तो राजनैतिक राष्ट्रवाद से हटकर मजहबी राष्ट्रवाद के आधार से हटकर केवल अपने